International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
March-April-2018, Volume-5, Issue-2
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

नवजागृति, हिन्दी उपन्यास : भारतीय किसान एवं मजदूर

डॉ.प्रदीप कुमार मीना
हिन्दी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय
सवाई माधोपुर

सन् 1857 हिन्दी प्रदेश में नवजागरण का प्रस्थान बिन्दु है। डॉ. रामविलास शर्मा ने 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' पुस्तक की भूमिका में ही लिखा है– "हिन्दी प्रदेश में नवजागरण 1857 ई. के स्वाधीनता–संग्राम से शुरू हुआ है। इस स्वाधीनता–संग्राम की पहली विशेषता यह है कि यह सारे देश की एकता को ध्यान में रखकर चलाया गया था।"[1] दरअसल नवजागरण का संबंध मनुष्य चेतना द्वारा जीवन के मानवतावादी चेहरे की पहचान से है। यह प्रत्येक स्तर पर मनुष्य और मनुष्य के बीच बराबरी के बोध का जागरण है।

डॉ. रामविलास शर्मा ने ही अपनी दूसरी पुस्तक 'स्वाधीनता संग्राम : बदलते परिप्रेक्ष्य' में नवजागरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है, "किसी देश या उसके प्रदेश के सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलन को हम नवजागरण कहते है। इसमें सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के प्रयत्न शामिल है। शूद्रों और स्त्रियों की स्थिति को बदलने के प्रयत्न नवजागरण के अंतर्गत है।"[2] डॉ. शर्मा ने लिखा भी है, "इ स संग्राम की मुख्य विशेषता यह है कि इसका नेतृत्व उन किसानों ने किया जो फौज में सिपाहियों और सुबेदारों के रूप में काम कर रहे थे। अनेक छोटे–बड़े सामन्त इनके सहायक थे, संग्राम के नेता नहीं। अक्सर वे देशी सेना के दबाव में आकर अंग्रेजों से लड़े। फौज के भीतर वाले किसानों के साथ गाँवों के गैर–फौजी किसान थे और इन दोनों ने मिलकर जो हथियारबंद लड़ाई चलाई वैसी लड़ाई न तो सन् 1857 से पहले कभी चलाई गयी थी और न उसके बाद कभी चलायी गयी। उनके साथ निम्न वर्ग के सैकड़ों आदमी थे। हिन्दुओं के साथ हजारों मुसलमान थे। इस लड़ाई का असर उनके लोकगीतों मकं दिखाई देता है।"[3]

ज्योतिबा फुले की पुस्तक 'किसान का कोड़ा' में किसानों के हित में उन्होंने जबरदस्त बातें की है– 'जिनकी मेहनत पर सरकारी फौज लवाजमा, गोला–बारूद, गोरे कर्मचारियों का हद से ज्यादा ऐयाशी और काले कर्मचारियों का हद से ज्यादा वेतन, पेंशन और दान–दक्षिणा मिलती है, उन किसानों का क्या पान बीड़ी का भी सम्मान न मिलना चाहिए ..... भैया, जो सभी देशवासियों के सुख के आधार हैं, उनके इतने बुरे

हाल।''[4] आचार्य शुक्ल ने 'इतिहास' में लिखा है– ''उपन्यास और छोटी कहानियों के ढ़ांचे हमने पश्चिम से लिए है। हैं भी ये ढ़ांचे बहुत सुन्दर। हमें ढ़ांचों तक ही सीमित रहना चाहिए।''[5]

हिन्दी में प्रेमचन्द के आगमन से पूर्व भुवनेश्वर मिश्र का उपन्यास 'बलवंत भूमिहार' जो अब तक अनुपलब्ध था, लेकिन अभी–अभी राम निरंजन परिमिलेंदु की प्रस्तुति के साथ पुनर्प्रकाशित हुआ है। कथा समीक्षक मधुरेश ने इसकी समीक्षा करते हुए लिखा है– ''एक सीमित अर्थ में ही 'बलवंत भूमिहार' किसान–जीवन से संबंधित उपन्यास है।''[6] आगे उन्होंने लिखा है कि, ''भुवनेश्वर मिश्र का 'बलवंत भूमिहार' उस तरह किसान–जीवन का उपन्यास नहीं है जैसे आगे चलकर प्रेमचन्द ने लिखे। उसमें न जमींदारों द्वारा किसानों के शोषण के चित्र हैं, 'न' ही वर्ग–संघर्ष का कोई संकेत है। उसमें वह सामाजिक संरचना भी कोई जगह नहीं बनाती जिसमें पुरोहित, बनिया और सरकारी अमला एक त्रिकोण के रूप में किसानों की दयनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार है। 'बलवंत भूमिहार' जैसा कि स्पष्ट है, बिहार के दो जमींदार परिवारों की आपसी रंजिश और प्रतिद्वंद्विता की कहानी है।''[7]

प्रेमचन्द ने लिखा है, ''भूमि उसकी है जो उसको जोते, शासक को उसकी उपज में भाग लेने का अधिकार इसलिए है कि वह देश में शांति और रक्षा की व्यवस्था करता है, जिसके बिना खेती हो ही नहीं सकती। किसी तीसरे वर्ग का समाज में कोई स्थान नहीं है।''[8] उसका चित्र प्रेमचन्द ने इस तरह से खींचा है, ''बड़ी निर्दयता से लगान वसूलते। एक कौड़ी भी बाकी न छोड़ते। जिसने रूपये न दिए या न दे सका, उस पर नालिश व कुर्की की कार्रवाई और एक का डेढ वसूल किया जाता।''[9] प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' में कुछ यूं की है, ''कृषि प्रधान देश में खेती केवल जीविका का साधन नहीं है, सम्मान की वस्तु भी है। गृहस्थ कहलाना गर्व की बात है। किसान गृहस्थी में अपना सर्वस्व खोकर विदेश जाता है। यह गर्व उसकी सारी दुर्गति की पुरौती कर देता है।''[10] फिर भी 'कर्मभूमि' के काशी के लिए ''मजूरी, मजूरी है; किसानी, किसानी है। मजूर लाख लेता है मजूर ही कहलाएगा। सिर पर घास लिए चले जा रहे हैं। कोई इधर से पुकारता है, ओ घासवाले! कोई उधर से। किसी की मेड़ पर घास रख लो, तो गालियां मिलें। किसानी में मरजाद है।''[11] परन्तु इस मरजाद की बात पर होरी का बेटा गोबर टिप्पणी करता है, ''जिसे पेट की रोटी मयस्सर नहीं, उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढ़ोंग है।''[12]

प्रेमचन्द ने 'गोदन' में लिखा है– ''एक कोने में तुलसी का चबूतरा है, दूसरी ओर जुआर ढेठों के कई बोझ दीवार से लगाकर रखे है। बीच में पुवालों के गठ्ठे हैं। समीप ही ओखल है जिसके पास कूटा हुआ

धान पड़ा हुआ है। खपरैल पर लौकी की बेल चढ़ी हुई है और कई लौकियाँ ऊपर चमक रही हैं। दूसरी ओर की ओसारी में एक गाय बंधी हुई हैं।''[13] रामदरश मिश्र ने लिखा है, ''प्रेमचन्द ने भारतीय किसान को बहुत विश्वस्त रूप से उभारा है किन्तु यह किसान कोई रूढ़–स्वरूप प्राप्त या ठहरा हुआ किसान नहीं है बल्कि वह नये युग–संदर्भ में बदल रहा है। उस बदलाव, उस संक्रांति की पहचान भी 'गोदान' में बहुत गहराई व्यंजित हुई है।''[14]

'अलका' की भूमिका में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने लिखा है– ''घटनाओं में सत्य होने के कारण स्थानों के नाम कहीं–कहीं नहीं दिए गए हैं। मुझे इससे उपन्यास–तत्त्व की हानि नहीं दिखाई पड़ी।''[15] गाँव के निर्धन किसानों का एक चित्र उपस्थित करते हुए निराला लिखते है– ''गाँवों में शूद्रों की हीसंख्या अधिक है। प्रायः सभी किसान। कुछ ब्राह्मण हैं, जो अत्यन्त दरिद्र, बकरियों का कारोबार करते है। दो–चार घर ऐसे भी हैं जो कश्तकरी करते है।''[16] डॉ. रामविलास शर्मा ने 'निराला की साहित्य–साधना' में लिखा है– ''..... निराला ने अपना ध्यान केन्द्रित किया समाज के उस वर्ग पर जिसे दासता से सबसे अधिक कष्ट था, भारत के उन किसानों पर जो सोलहो आने विवश थे। इनमें भी जो सबसे दलित, निर्धन, भूमिहीन, जमींदार की बेगार करने वाले किसान थे, उनके प्रति निराला की सहानुभूति ज्यादा थी।''[17]

संदर्भ

1. डॉ. रामविलास शर्मा, 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' की भूमिका का अंश।
2. डॉ. रामविलास शर्मा, 'स्वाधीनता संग्राम बदलते परिप्रेक्ष्य', पृ. 121।
3. डॉ. रामविलास शर्मा, 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' की भूमिका का अंश।
4. ज्योतिबा फुले रचनावली, खण्ड–1, पृ. 353, संपादक एल.जी.मेश्राम 'विमलकीर्ति'।
5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 294।
6. कथाक्रम, संपादक, शैलेन्द्र सागर, अक्टूबर–दिसम्बर 2006, पृ. 8।
7. कथाक्रम, संपादक, शैलेन्द्र सागर, अक्टूबर–दिसम्बर 2006, पृ. 9।
8. प्रेमचन्द, प्रेमाश्रय, पृ. 153।
9. प्रेमचन्द, प्रेमाश्रय, पृ. 51।
10. प्रेमचन्द, कर्मभूमि, पृ. 274।
11. प्रेमचन्द, कर्मभूमि, पृ. 151।

12. प्रेमचन्द, गोदान, पृ. 296।
13. प्रेमचन्द, गोदान, पृ. 304।
14. रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास का अन्तर्यात्रा, पृ. 58।
15. सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला', 'अलका' की भूमिका का अंश।
16. सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला', 'अलका' की भूमिका का अंश, पृ. 72।
17. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना, खण्ड–2, पृ. 54।